माँ बगलामुखी चालीसा

एवं

पीताम्बर चालीसा



ॐ माँ बगलामुखी चालीसा

एवं

पीताम्बर चालीसा

मूल्य 10/-

प्रकाशक:
बी०एस० प्रमिन्दर
प्रकाशन, दिल्ली-51

मुख्य वितरक:
कर्मसिंह अमरसिंह, पुस्तक विक्रेता
बड़ा बाजार हरिद्वार-249401

।।माँ बगलामुखी चालीसा।।

॥ दोहा॥

सिर नवाइ बगलामुखी, लिखूँ चालीसा आज।
कृपा करहु मोपर सदा, पूरन हो मम काज॥

चौपाई

जय जय जय श्री बगला माता।
आदिशक्ति सब जग की त्राता॥
बगला सम तव आनन माता।
एहि ते भयउ नाम विख्याता॥

शशि ललाट कुण्डल छवि न्यारी।
अस्तुति करहिं देव नर नारी॥
पीतवसन तन पर तव राजै।
हाथहिं मुद्गर गदा विराजै॥
तीन नयन गल चम्पक माला।
अमित तेज प्रकटत है भाला॥
रत्न-जड़ित सिंहासन सोहै।
शोभा निरखि सकल जन मोहै॥

आसन पीतवर्ण महारानी।
भक्तन की तुम हो वरदानी॥
पीत आभूषण पीतहिं चन्दन।
सुर नर नाग करत सब वन्दन॥
एहि विधि ध्यान हृदय में राखै।
वेद पुराण सन्त अस भाखै॥
अब पूजा विधि करौं प्रकाशा।
जाके किये होत दुख नाशा॥

प्रथमहिं पीत ध्वजा फहरावै।
पीतवसन देवी पहिरावै॥
कुङ्कुम अक्षत मोदक बेसन।
अबीर गुलाल सुपारी चन्दन॥
माल्य हरिद्रा अरु फल पाना।
सबहिं चढ़ाई धरै उर ध्याना॥
धूप दीप कर्पूर की बाती।
प्रेम सहित तव करहिं आरती॥

अस्तुति करू हाथ दोउ जोरे।
पुरवहु मातु मनोरथ मोरे।।
मातु भगति तव सब सुख खानी।
करहु कृपा मो निज जन जानी।।
त्रिविध ताप सब दुःख मिटावहु।
तिमिर मिटाकर ज्ञान बढ़ावहु।।
बार-बार मैं बिनवउँ तोहीं।
अविरल भगति ज्ञान दो मोहीं।।

पूजन अन्त में हवन करावै।
सो नर मनवांछित फल पावै॥
शरण होम करै जो कोई।
ताके वश सचराचर होई॥
तिल तन्दुल संग क्षीर मिलावै।
भक्ति प्रेम से हवन करावै॥
दुःख दरिद्र व्यापै नहिं सोई।
निश्चय सुख-सम्पति सब होई॥

फूल अशोक हवन जो करई।
ताके गृह सुख-सम्पति भरई॥
फल सेमर का होम करीजै।
निश्चय वाको रिपु सब छीजै॥
गुग्गुल घृत होमै जो कोई।
तेहि के वश में राजा होई॥
गुग्गुल तिल सँग होम करावै।
ताको सकल बन्ध कट जावै॥

बीजाक्षर का पाठ जो करहीं।
बीजमन्त्र तुम्हरो उच्चरहीं॥
एक मास निशि जो कर जापा।
तेहि कर मिटत सकल सन्तापा॥
घर की शुद्ध भूमि जहँ होई।
साधक जाप करै तहँ सोई।
इच्छित फल सोई निश्चय पावै।
यामें नहिं कछु संशय लावै॥

अथवा तीर नदी के जाई।
साधक जाप करै मन लाई॥
दस सहस्त्र जप करै जो कोई।
सकल काज तेहि कर सिद्धि होई॥
जाप करै जो लक्षहिं बारा।
ताकर होय सुयश विस्तारा॥
जो तव नाम जपै मन लाई।
अल्पकाल महँ रिपुहिं नसाई॥

सप्तरात्रि जो जापहिं नामा।
वाको पूरन हो सब कामा॥
नव दिन जाप करे जो कोई।
व्याधि रहित ताकर तन होई॥
ध्यान करै जो बन्ध्या नारी।
पावै पुत्रादिक फल चारी॥
प्रातः सायं अरु मध्याना।
धरे ध्यान होवै कल्याना॥

कहँ लगि महिमा कहौं तिहारी।
नाम सदा शुभ मंगलकारी।।
पाठ करै जो नित्य चालीसा।
तेहि पर कृपा करहिं गौरीशा।।

॥ दोहा॥

सन्तशरण को तनय हूँ, हरिहर मिश्र सुनाम।
हरिद्वार मण्डल बसूँ, धाम हरिपुर ग्राम।।
उन्नीस सौ पिचानबे सन् की, श्रावण शुक्ला मास।
चालीसा रचना कियौं, तव चरणन को दास।।

आरती श्री बगलामुखी जी की

जय जय श्री बगलामुखी माता, आरति करहुँ तुम्हारी।। टेक।।
पीत वसन तन पर तव सोहै, कुण्डल की छबि न्यारी।। जय-जय...
कर-कमलों में मुद्गर धारै, अस्तुति करहिं सकल नर-नारी।। जय-जय...
चम्पक माल गले लहरावे, सुर नर मुनि जय जयति उचारी।। जय-जय...
त्रिविध ताप मिटि जात सकल सब, भक्ति सदा है तव सुखकारी।।जय-जय...
पालत हरत सृजत तुम जग को, सब जीवन की हो रखवारी।। जय-जय...
मोह निशा में भ्रमत सकल जन, करहु हृदय तुम उजियारी।। जय-जय...
तिमिर नशावहु ज्ञान बढ़ावहु, अम्बे तुमही हो असुरारी।। जय-जय...
सन्तन को सुख देत सदा ही, सब जन की तुम प्राण पियारी।। जय-जय...
तव चरणन जो ध्यान लगावै, ताकी भव-भयहारी।। जय-जय...
प्रेम सहित जो करहिं आरती, ते नर मोंक्षधाम अधिकारी।। जय-जय

दोहाः- बगलामुखी की आरती, पढ़ै सुनै जो काये।
विनती कुलपति मिश्र की, सुख-सम्पति सब होय।।

॥श्री पीताम्बरा चालीसा॥

॥ दोहा॥

नमो महाविद्या वरद, माँ पीताम्बरा दयाल।
स्तम्भन क्षण में करे, सुमिरन अरिकुल काल॥

नमो नमो पीताम्बरा भवानी।
बगलामुखी नमो कल्यानी॥
भक्त वत्सला शत्रु नसानी।
नमो महाविद्या वरदानी॥

अमृत सागर बीच तुम्हारा।
रत्न जड़ित मणि मंडित प्यारा।
स्वर्ण सिंहासन पर आसीना
पीताम्बरा अति दिव्य नवीना॥
स्वर्णाभूषण सुन्दर धारे।
सिर पर चन्द्र मुकुट श्रृंगारे॥
तीन नेत्र दो भुजा मृणाला।
धारे मुद्गर पाश कराला॥

भैरव करें सदा सेवकाई।
सिद्ध सब काम विघ्न नसाई।।
तुम हताश की निपट सहारा।
करे अकिंचन अरिकुल धारा।।
तुम काली तारा भुवनेशी।
त्रिपुरसुन्दरी भैरवि वेशी।।
छिन्नभाल धूमावती मातंगी।
गायत्री तुम बगला रंगी।।

सकल शक्तियाँ तुम में साजें।
ह्रीं बीज के बीच बिराजें॥
दुष्ट स्तम्भन अरिकुल कीलन।
मारण वशीकरण सम्मोहन॥
दुष्टोच्चाटन कारक माता।
अरि जिह्वा कीलक संघाता॥
साधक की विपति की त्राता।
नमो महामाया विख्याता॥

मुद्‌गर शिला लिए अति भारी।
प्रेत आसन पर किए सवारी॥
तीन लोक दस दिशा भवानी।
बिचरहु तुम जन हित कल्यानी॥
अरि अरिष्ट सोचे जो जन को।
बुद्धि नाश कर कीलक तन को॥
हाथ पांव बांधहुं तुम ताके।
हनुहु जीभ विच मुद्‌गर वाके॥

चोरों का जब संकट आवे।
रण में रिपुओं से घिर जावे॥
अनल अनिल विप्लव घहरावे।
वाद विवाद न निर्णय पावे॥
मूठ आदि अभिचारन संकट।
राजभीति आपत्ति सन्निकट॥
ध्यान करत सब कष्ट नसावे।
भूत प्रेत न बाधा आवे॥

सुमिरत राजद्वार बंध जावे।
सभा बीच स्तम्भन छावे॥
नाग सर्प बृश्चिकादि भयंकर।
खल विहंग भागहिं सब सत्वर॥
सर्व रोग की नाशन हारी।
अरिकुल मूलोच्चाटन कारी॥
स्त्री पुरुष राज सम्मोहक।
नमो नमो पीताम्बर सोहक॥

तुमको सदा कुबेर मनावें।
श्री समृद्धि सुयश नित पावें॥
शक्ति शौर्य की तुम्हीं विधाता।
दुःख दारिद्र विनाशक माता॥
यश ऐश्वर्य सिद्धि की दाता।
शत्रु नाशिनी विजय प्रदाता॥
पीताम्बरा नमो कल्यानी।
नमो मातु बगला महारानी॥

जो तुमको सुमरे चित्त लाई।
योग क्षेम से करो सहाई॥
आपत्ति जन की तुरत निवारो।
आधि व्याधि संकट सब टारो॥
पूजा विधि नहिं जानत तोरी।
अर्थ न आखर करहूं निहोरी॥
मैं कुपुत्र अति निवल उपाया।
हाथ जोड़ शरणागत आया॥

जग में केवल तुम्हीं सहारा।
सारे संकट करहूं निवारा॥
नमो महादेवी हे जग माता।
पीताम्बरा नमो सुखदाता॥
सौम्य रूप धर बनती माता।
सुख सम्पत्ति सुयश की दाता॥
रौद्र रूप धर शत्रु संहारो।
अरि जिह्वा में मुद्गर मारो॥

नमो नमो महाविद्या आगारा।
आदि शक्ति सुन्दरी अपारा॥
अरि भंजक विपत्ति की त्राता।
दया करो पीताम्बरि माता॥

दोहा- रिद्धि सिद्धि दाता तुम्हीं। अरि समूल कुल काल॥
मेरी सब बाधा हरो। पीताम्बरा माँ तत्काल॥

इस पुस्तक को प्रचारार्थ बांटने के लिए नीचे लिखे पते पर सम्पर्क करें।
पुस्तकें लागत मात्र मूल्य पर दी जायेंगी।

कर्मसिंह अमर सिंह पुस्तक विक्रेता
बड़ा बाजार, हरिद्वार फोन-01334-225619

श्री पीताम्बरा माँ की आरती

जय पीताम्बरधारिणि जय सुखदे वरदे, मातर्जय सुखदे वरदे।
भक्तजनन् क्लेशं, भक्तजनन् क्लेशं, सततं दूर करें॥
जय देवि जय देवि॥ (१)

असुरैः पीड़ितदेवास्तव शरणं प्राप्ताः, मातास्तवशरणं प्राप्ताः।
धृत्वा कौर्मशरीरं, धृत्वा कौर्मशरीरं, दूरीकृतदुःखम्॥
जय देवि जय देवि॥२॥

मुनिजनवन्दितचरणे जय विमले बगले, मातर्जय विमले बगले।
संसारार्णवभीतिं संसारार्णवभीतिं, नित्यं शान्तकरे॥
जय देवि जय देवि॥३॥

नारदसनकमुनीन्द्रैर्ध्यातं पदकमलं मार्तध्यातं पदकमलं।
हरिहरद्रुहिणसुरेन्द्रैः हरिहरद्रुहिणसुरेन्द्रैः सेवितपदयुगलम्॥
जय देवि जय देवि॥४॥

काञ्चनपीठनिविष्टे मुद्गरपाशयुते, मातर्मुद्गरपाशयुते।
जिह्वावज्रसुशोभित जिह्वावज्रसुशोभित पीतांशुकलसिते।।
जय देवि जय देवि।।५।।

बिन्दुत्रिकोणषडस्त्रैरष्टदलोपरिते, मातरष्टदलोपरिते।
षोडशदलगतपीठं षोडशदलगतपीठं भूपुरवृत्तयुतम्।।
जय देवि जय देवि।।६।।

इत्थं साधकवृन्दश्चिन्तयते रूपं मातश्चिन्तयतेरूपं।
शत्रुविनाशकबीजं शत्रुविनाशकबीजं धृत्वा हृत्कमले।।
जय देवि जय देवि।।७।।

अणिमादिकबहुसिद्धिं लभते सौख्ययुतां, मातर्लभते सौख्ययुतां।
भोगान्भुक्त्वा सर्वान्, भोगान्भुक्त्वा सर्वान् गच्छति विष्णुपदम्।।
जय देवि जय देवि।।८।।

पूजाकाले कोऽपि आर्तिक्यं पठते, मातरार्तिक्यं पठते।
धनधान्यादिसमृद्धः धनधान्यादिसमृद्धः सान्निध्यं लभते।।
जय देवि जय देवि।।९।।

अथ बगलामुखी कवचं

श्रुत्वा च बगला पूजां स्तोत्रं चापि महेश्वर।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि कवचं तद् मे प्रभो॥१॥

हे महेश्वर-मैंने बगलामुखी देवी की पूजा तथा स्तोत्र सुना, अब मैं (शरीर रक्षार्थ) कवच सुनना चाहता हूँ।

वैरिनाशकरं दिव्यं सर्वाऽशुभ विनाशनम्।
शुभदं स्मरणात्पुण्यं त्राहिमां दुःख नाशनम्॥२॥

जिससे शत्रुओं का तथा सभी प्रकार के अशुभ (अनिष्ट) का विनाश किया जाने वाला है। जिसका केवल स्मरण मात्र करने से सर्व प्रकार के पुण्य मिलते हैं और दुःख का नाश होता है।

भैरव उवाच-

कवचं शृणु वक्ष्यामि भैरवि प्राणवल्लभे।
पठित्वा धारयित्वा तु त्रैलोक्ये विजयी भवेत्॥१॥

भैरव ने कहा-हे प्राणवल्लभा भैरवी-मैं कवच को तुमसे कहता हूँ, उसे सुनो, जिसे पढ़ तथा धारण कर मनुष्य तीनों लोकों में विजयी होता है।

इस विनियोग को पढ़कर जल छोड़ें-

विनियोगः-ॐ अस्य श्री बगलामुखी कवचस्य नारद ऋषिः अनुष्टुप् छंदः॥ श्री बगलामुखी देवता लं बीजम् ईं शक्तिः। ऐं कीलकं। पुरुषार्थचतुष्टय सिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः॥

कवचारम्भः

शिरो मे बगला पातु हृदयेकाक्षरी परा।
ॐ ह्रीं ॐ मे ललाटे च बगला वैरिनाशिनी॥१॥

शिर की रक्षा बगला देवी करें, हृदय की एकाक्षरी ह्लीं रक्षा करें। ललाट की रक्षा त्र्यक्षरी वैरिनाशिनी बगलादेवी करें।

गदाहस्ता सदा पातु मुखं मे मोक्षदायिनी।
वैरि जिह्वाधरा पातु कण्ठं मे बगलामुखी॥२॥

गदा हस्त है जिसके ऐसी मोक्षदायिनी मुख की रक्षा करें। बैरियों की जिह्वा को पकड़ने वाली कण्ठ की रक्षा बगलामुखी करें।

उदरं नाभिदेशं च पातु नित्यं परात्परा।
परात्परतरा पातु मम गुह्यं सुरेश्वरी॥३॥

पेट की और नाभि की रक्षा तथा मेरे गुप्तांगों की रक्षा परात्परा देवी बगलामुखी करें।

हस्तौ चैव तथापातु पार्वती परिपातु मे।
विवादे विषमे घोरे संग्रामे रिपुसंकटे।।४।।
पीताम्बराधरा पातु सर्वांगं शिवनर्तकी।
श्रीविद्या समयं पातु मातंगी पूरिता शिवा।।५।।

हाथ-पैरों की रक्षा पार्वती विवाद समय में कठिन स्थान में शत्रुसंकट प्राप्ति होने पर, संग्राम में मेरे सभी अंगों की पीतवस्त्रधारी पीताम्बरा, शिवनर्तकी रक्षा करें। श्रीविद्या समय पाकर पास से मेरी रक्षा करें। सभी की पूर्ति मातंगी और शिवा करें।

पातु पुत्रं सुतांश्चैव कलत्रं कालिका मम।
पातु नित्यं भ्रातरं मे पितरं शूलिनी सदा।।६।।

पुत्र तथा स्त्री की रक्षा कालिका देवी करें। नित्य भाई और पिता की रक्षा शूलिनी देवी करें।

रन्ध्रे हि बगला देव्याः कवचं मन्मुखोदितम्।
न वैं दैयम मुख्याय सर्वसिद्धि प्रदायकम्।।७।।

हे भैरवि-मेरे मुख के द्वारा कहे इस बगलाकवच को-जो सर्वसिद्धि को देने वाला है-अनधिकारी को न बतायें।

पठनाद्धारणादस्य पूजनाद्वाञ्छितं लभेत्।
इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेद् बगलामुखीम्।।८।।

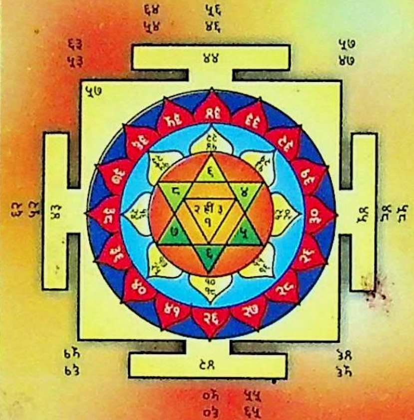
पिबन्ति शोणितं तस्य योगिन्यः प्राप्य सादराः
वश्ये चाकर्षणे चैव मारणे मोहने तथा॥९॥
महाभये विपत्तौ च पठेद्वा पाठयेत्तु यः।
तस्य सर्वार्थ सिद्धिः स्याद्भक्तियुत्तस्य पार्वति॥१०॥

इस कवच को पढ़ने, धारण करने तथा पूजन करने से सर्व प्रकार का वाञ्छित फल प्राप्त होता है। जो इस कवच को नहीं जानकर जपता है, उसके रक्त को योगिनियां प्रसन्नता से पान करती हैं। हे पार्वती-वश करने में, आकर्षण में, मारण, मोहन, महाभय तथा विपत्ति आने पर इस कवच को जो पढ़ता है, पढ़ाता है वह इस कवच की भक्ति के द्वारा सम्पूर्ण मनोरथ को प्राप्त करता है।

॥रुद्रयामले बगलामुखी कवचं भाषाटीका सहितं सम्पूर्णम्॥

श्री बगलामुखी यंत्र

भेंटकर्ता :-



कर्म सिंह अमर सिंह पुस्तक विक्रेता हरिद्वार